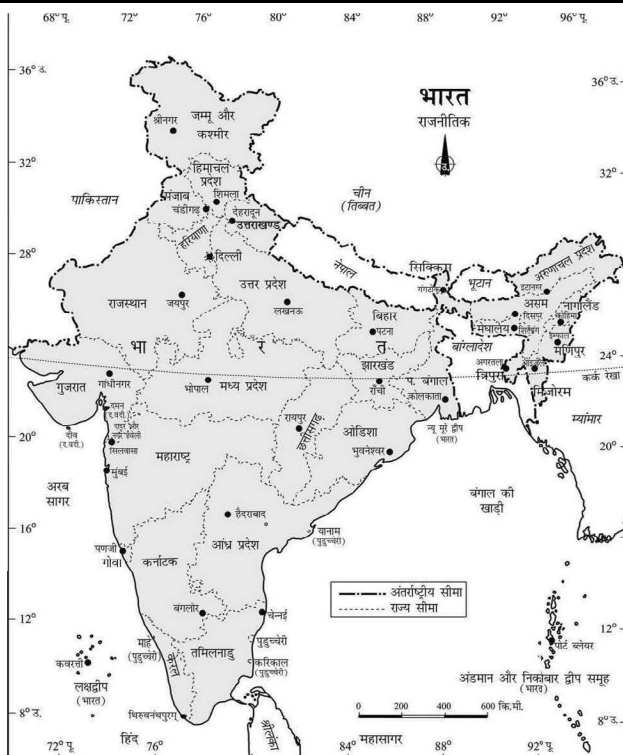


भारत भूमि और उसके निवासी

भारत : एक परिचय

- ❑ भारत बहु संस्कृति वाला देश है और यह विश्व की प्राचीनतम और महानतम सभ्यताओं में से एक है।
- ❑ आकार की दृष्टि से भारत विश्व में 7वें और जनसंख्या की दृष्टि से दूसरे स्थान पर है।
- ❑ पर्वतमाला और समुद्र इसे शेष एशिया से पृथक करते हैं और एक विशिष्ट भौगोलिक पहचान प्रदान करते हैं।
- ❑ यह उत्तर में विशाल हिमालय से घिरा है और दक्षिण की ओर विस्तार के साथ कर्क रेखा पर शंकु आकार धारण किए हुए पूर्व में बंगाल की खाड़ी और पश्चिम में अरब सागर के बीच हिंद महासागर में फैला है।
- ❑ पूरी तरह उत्तरी गोलार्द्ध में स्थित इसकी मुख्य भूमि की अवस्थिति 8°4' और 37°6' अक्षांश उत्तर तथा 68°7' और 97°25' देशांतर पूर्व में है।
- ❑ उत्तर से दक्षिण तक इसका अक्षांशीय विस्तार करीब 3,214 किलोमीटर और पूर्व से पश्चिम की तरफ देशांतरीय विस्तार करीब 2,933 किलोमीटर है।
- ❑ इसकी स्थलीय सीमा करीब 15,200 किलोमीटर है। मुख्य भूमि, लक्षद्वीप समूह और अंडमान और निकोबार द्वीप समूह सहित तट रेखा की कुल लंबाई 7,516.6 किमी. है।



भारत का राजनीतिक मानचित्र

भौगोलिक पृष्ठभूमि

- ❶ भारत की सीमा उत्तर-पश्चिम में अफगानिस्तान तथा पाकिस्तान; उत्तर में चीन, भूटान तथा नेपाल सुदूर पूर्व में म्यांमार और बांग्लादेश से लगती है।
- ❷ पाक जलडमरूमध्य और मन्नार की खाड़ी से निर्मित एक समुद्री चैनल श्रीलंका को भारत से पृथक करता है।
- ❸ देश को मुख्य रूप से 6 अंचलों—उत्तरी, दक्षिणी, पूर्वी, पश्चिमी, मध्यवर्ती और पूर्वोत्तर अंचल में वर्गीकृत किया जा सकता है। वर्तमान समय में भारत में 29 राज्य और 7 केंद्र शासित प्रदेश हैं।
- ❹ किसी देश की सीमाएँ प्राकृतिक बनावट, ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक परिस्थितियों, उसके इतिहास, लोकाचार, रिवाज, परम्परा, और प्रकृति द्वारा निर्धारित होती हैं। कृत्रिम सीमाएँ परिस्थितियों, संधियों, युद्धों, आदि द्वारा बनती और बिगड़ती हैं, किन्तु प्राकृतिक सीमाएँ एक प्रकार से अधिक स्थायी होती हैं।

प्राकृतिक संरचना

- ❶ मुख्य भूमि 4 भागों—विशाल हिमालय क्षेत्र, गंगा और सिंधु के मैदानी भाग, रेगिस्तानी क्षेत्र और दक्षिणी प्रायद्वीप में बँटी है।
- ❷ हिमालय पर्वतमाला में 3 समानांतर श्रृंखलाएँ हैं, जो बड़े पठारों और घाटियों से विभाजित हैं, जिनमें से कश्मीर और कुल्लू जैसी कुछ विस्तृत और अत्यंत उपजाऊँ घाटियाँ प्राकृतिक सौंदर्य से भरपूर हैं।

हिमालय के प्रमुख दर्रे	
आफिल दर्रा	काराकोरम श्रेणी में K2 के उत्तर में लगभग 5000 मी. की ऊँचाई पर स्थित यह दर्रा लद्दाख को चीन के झिंजीयांग (सिक्क्यांग) प्रदेश से जोड़ता है। शीत ऋतु में यह नवंबर से मई के प्रथम सप्ताह तक बंद रहता है।
बारालाचा दर्रा	समुद्र तल से 4843 मी. की ऊँचाई पर जम्मू एवं कश्मीर राज्य में स्थित एक दर्रा है। यह मनाली को लेह से जोड़ने वाले राष्ट्रीय राजमार्ग पर स्थित है। शीत ऋतु में (नवंबर से मध्य मई तक) यह बर्फ से ढके होने के कारण आवागमन के लिए बंद रहता है।
बनिहाल दर्रा	समुद्र तल से 2835 मी. की ऊँचाई पर पीरपंजाल श्रेणी में स्थित यह दर्रा जम्मू को श्रीनगर से जोड़ता है। शीत ऋतु में यह बर्फ से ढका रहता है। वर्षा पर्यन्त सड़क परिवहन की व्यवस्था करने के उद्देश्य से यहाँ जवाहर टनल/सुरंग (पंडित जवाहरलाल नेहरू के नाम पर) खोदी गई, जिसका उद्घाटन दिसंबर 1956 में किया गया।
पीर-पंजाल दर्रा	जम्मू को श्रीनगर से जोड़ने वाला यह पारंपरिक दर्रा 'मुगल रोड' पर स्थित है। उप प्रायद्वीप के विभाजन के बाद इस दर्रे को बंद कर दिया गया। जम्मू को कश्मीर घाटी से जोड़ने वाला यह सबसे सरल और छोटा एवं पक्कीकृत मार्ग है।
कारा ताघ दर्रा	काराकोरम पर्वत श्रेणी में समुद्र तल से लगभग 6000 मी. से भी अधिक ऊँचाई पर स्थित यह दर्रा प्राचीन रेशम मार्ग की एक शाखा थी। शीत काल में यह बर्फ से ढका रहता है।
रोहतांग दर्रा	समुद्र तल से लगभग 3979 मी. की ऊँचाई पर स्थित यह दर्रा हिमाचल प्रदेश की कुल्लू, लाहुल एवं स्पीति घाटियों को जोड़ता है।
बुर्जिल दर्रा	समुद्र तल से 5000 मी. से अधिक ऊँचाई पर स्थित यह दर्रा कश्मीर घाटी को लद्दाख के देवसाई मैदानों से जोड़ता है। बर्फ से ढके होने के कारण यह शीत ऋतु में व्यापार तथा परिवहन के लिए बंद रहता है।

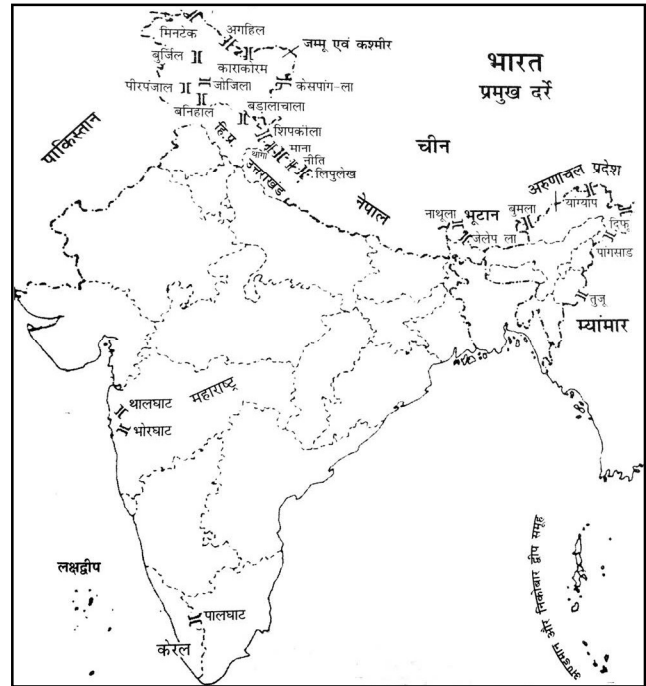
जोजिला	समुद्रतल से लगभग 3850 मी. की ऊँचाई पर स्थित यह दर्रा श्रीनगर को कारगिल और लेह से जोड़ता है। अत्यधिक बर्फबारी के कारण यह शीतकाल (दिसंबर मध्य मई) तक आवागमन के लिए बंद रहता है।
पेंजी ला	जोजिला दर्रे के पूरब में, समुद्र तल से 5000 मी. से भी अधिक ऊँचाई पर स्थित महान हिमालय का यह दर्रा कश्मीर घाटी को कारगिल (लद्दाख) से जोड़ता है। शीत काल में यह बर्फ से ढके होने के कारण नवंबर से मध्य मई तक आवागमन के लिए बंद रहता है।
खुंजेराब दर्रा (काराकोरम)	5000 मी. से भी अधिक ऊँचाई पर स्थित काराकोरम पर्वत का यह दर्रा लद्दाख और चीन के सिक्क्यांग प्रांत को जोड़ने वाला परंपरागत दर्रा है। यह शीत काल में (नवंबर-मई) तक बर्फ से ढका रहता है।
लिपु लेख	पिथौरागढ़ में स्थित यह दर्रा उत्तराखंड को तिब्बत से जोड़ता है। मानसरोवर के तीर्थयात्री इस दर्रे से होकर भी जाते हैं। यह भारत के चीन से होने वाले व्यापार में काफी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। वर्षा काल में होने वाले भूस्खलन तथा शीतकाल में होने वाले हिमस्खलन (avalanche) इस दर्रे की परिवहन व्यवस्था के लिए सबसे बड़ी समस्याएँ हैं।
माना दर्रा	महान हिमालय में समुद्र तल से लगभग 5611 मी. की ऊँचाई पर स्थित यह दर्रा उत्तराखंड को तिब्बत से जोड़ता है। शीतकाल में यह लगभग 6 महीने तक बर्फ से ढका रहता है।
टेल्स दर्रा	यह उत्तराखंड के पिथौरागढ़ और बागेश्वर जिलों में समुद्र तल से लगभग 5212 मी. की ऊँचाई पर स्थित है। पिंडारी हिमनद के कगार पर स्थित यह दर्रा पिंडारी घाटी को मिलाम घाटी से जोड़ता है। खड़ी ढाल और विषम सतह के कारण इस दर्रे को पार करना काफी कठिन है।

शिपकी-ला	समुद्र तल से 4300 मी. से भी अधिक ऊँचाई पर स्थित यह दर्रा सतलज महाखड्ड (gorge) से होकर हिमाचल प्रदेश को तिब्बत से संबद्ध करता है। तिब्बत से आने वाली सतलज नदी इसी दर्रे से भारत में प्रवेश करती है।
	भारत के चीन से होने वाले व्यापार के लिए यह तीसरा (नाथु ला एवं लिपुलेख के बाद) दर्रा (राजमार्ग संख्या 22) है। शीतकाल में यह बर्फ से ढका रहता है।
मंगशा धुरा दर्रा	समुद्र तल से लगभग 5000 मी. की ऊँचाई पर पिथौरागढ़ स्थित यह दर्रा उत्तराखण्ड को तिब्बत से जोड़ता है।
	मानसरोवर की यात्रा के लिए तीर्थ यात्रियों को इस दर्रे से भी गुजरना पड़ता है। पर्यटकों एवं तीर्थ यात्रियों के लिए भूस्खलन एक बड़ी समस्या है।
मुलिंग ला	गंगोत्री के उत्तर में स्थित यह एक मौसमी दर्रा है, जो उत्तराखंड को तिब्बत से जोड़ता है। शीतकाल में यह बर्फ से ढका होता है तथा यहाँ से कोई आवागमन संभव नहीं होता।
चांग ला	समुद्र तल से 5270 मी. से भी अधिक ऊँचाई पर स्थित महान हिमालय का यह दर्रा लद्दाख को तिब्बत से जोड़ता है।
	इस दर्रे के बाद की सड़क अत्यधिक तीखी ढाल वाली है, जो तिब्बत के एक छोटे शहर तांग्से (Tangtse) तक जाती है।
	इसका नामकरण इस दर्रे में स्थित 'चाँग-ला चाबा' के मंदिर के नाम पर किया गया है। बर्फ से ढके होने के कारण यह शीत ऋतु में आवागमन के लिए बंद रहता है।
देब्सा दर्रा	समुद्र तल से 5270 मी. की ऊँचाई पर हिमाचल प्रदेश के कुल्लू और स्पीति जिलों के मध्य स्थित यह एक महान हिमालय का दर्रा है।
	कुल्लू और स्पीति को जोड़ने वाले परंपरागत पिन-परबती दर्रे की तुलना में यह एक आसान और कम दूरी का विकल्प है।
दिहांग दर्रा	अरुणाचल प्रदेश राज्य में समुद्र तल से लगभग 1220 मी. की ऊँचाई पर स्थित एक दर्रा।
	यह अरुणाचल प्रदेश को मांडले (म्यांमार) से जोड़ता है।

दिकू दर्रा	अरुणाचल प्रदेश के पूर्वी भाग में स्थित यह दर्रा इस राज्य को मांडले (म्यांमार) तक का आसान और सबसे छोटा रास्ता (दिहांग की तुलना में) उपलब्ध कराता है।
इमिस ला	यह भारत और म्यांमार के बीच का एक परंपरागत दर्रा है जो व्यापार एवं परिवहन के लिए वर्ष पर्यंत खुला रहता है।
	समुद्र तल से 4500 मी. से भी अधिक ऊँचाई पर स्थित यह दर्रा लद्दाख को तिब्बत (चीन) से अपेक्षाकृत आसान संबद्धता उपलब्ध कराता है।
	दुरुह भू-भाग और खड़ी ढाल बनाने वाला यह दर्रा शीत ऋतु में बर्फ से ढक जाता है और बंद रहता है।
खारदुंग ला	समुद्र तल से 6000 मी. से भी अधिक ऊँचाई पर स्थित यह देश का मोटर वाहन चलने योग्य सबसे ऊँचा दर्रा है।
जेलेप ला	समुद्र तल से लगभग 4538 मी. ऊँचाई पर स्थित यह दर्रा सिक्किम को ल्हासा से जोड़ता है। यह चुंबी घाटी से होकर गुजरता है।
बोमडी ला	भूटान के पूरब में अरुणाचल प्रदेश स्थित महान हिमालय का दर्रा जिसकी ऊँचाई 2600 मी. है।
	यह अरुणाचल प्रदेश को तिब्बत की राजधानी ल्हासा से जोड़ता है।
	प्रतिकूल मौसम और बर्फबारी के कारण यह शीत ऋतु में बंद रहता है।
लनक ला	अक्साई चीन (लद्दाख) में लगभग 5000 मी. की ऊँचाई पर स्थित यह दर्रा लद्दाख को ल्हासा से जोड़ता है।
	चीन ने यहाँ एक सड़क का निर्माण किया है, जो उसके सिक्यांग (जिंजीयांग) प्रांत को तिब्बत से जोड़ती है।
लिखापानी	अरुणाचल प्रदेश में 4000 मी. से भी अधिक ऊँचाई पर स्थित इस दर्रा म्यांमार को जोड़ता है।
	व्यापार एवं यातायात के लिए यह वर्ष पर्यन्त कार्य करने वाला एक दर्रा है।

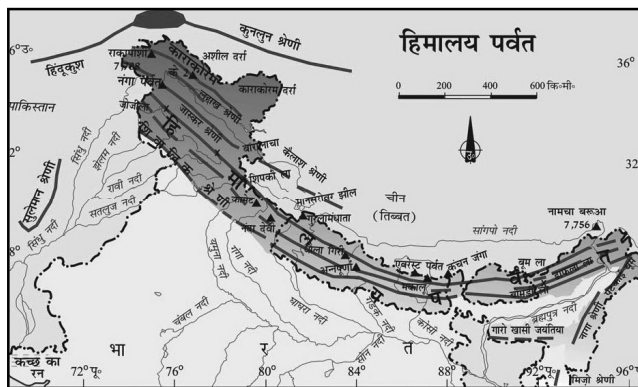
नाथु ला	यह भारत-चीन सीमा पर स्थित एक दर्रा है। समुद्र तल से लगभग 4310 मी. की ऊँचाई पर स्थित यह दर्रा प्राचीन रेशम मार्ग (Silk Route) की एक शाखा है।
थांग ला दर्रा	समुद्र तल से लगभग 5359 मी. की ऊँचाई पर लद्दाख में स्थित यह एक पर्वतीय दर्रा है। खारदुंग ला के बाद मोटर वाहन चलने योग्य भारत का दूसरा सबसे ऊँचा दर्रा है।
	इन पर्वतमालाओं में विश्व की कुछ सबसे ऊँची चोटियाँ स्थित हैं। इन पर्वतमालाओं में स्थिति दर्रा से होकर यात्रा की जा सकती है, जिनमें दार्जिलिंग के उत्तर-पूर्व में चुंबी घाटी होते हुए मुख्य भारत-तिब्बत व्यापार मार्ग पर स्थित जेलेप-ला, नाथू-ला और कल्पा (किनौर) के उत्तर-पूर्व में सतलुज घाटी में शिपकी-ला प्रमुख हैं।
	पर्वतमाला करीब 2,400 किलोमीटर में फैली है, जो अलग-अलग स्थानों पर 240 से 320 किलोमीटर तक चौड़ी है।
	पूर्व में भारत और म्यांमार तथा भारत और बांग्लादेश के बीच अपेक्षाकृत कम ऊँचाई की पर्वत श्रृंखलाएँ हैं।
	लगभग पूरे उत्तर-पूर्व में गारो, खासी, जयंतिया और नागा पर्वतमालाएँ इस श्रृंखला को उत्तर-दक्षिण में मिजो और रखाई पर्वतमाला के साथ जोड़ती हैं।
नीति दर्रा	गंगा और सिंधु के मैदानी भाग, करीब 2,400 किलोमीटर लंबे और 240 से 320 किलोमीटर चौड़े हैं, जो तीन विशेष नदी प्रणालियों—सिंधु, गंगा और ब्रह्मपुत्र के थालों से मिल कर बने हैं।
	भारत और चीन की सीमा से होने वाले 3 व्यापारिक मार्गों में से एक नाथु ला भी है। भारत-चीन युद्ध (1962) के पश्चात् इसे वर्ष 2006 में पहली बार खोला गया।
	समुद्र तल से लगभग 5068 मी. की ऊँचाई पर स्थित यह दर्रा उत्तराखंड को तिब्बत से जोड़ता है।
	शीत काल में यह बर्फ से ढके होने के कारण नवंबर से मध्य मई तक आवागमन के लिए बंद रहता है।

पंगसान दर्रा	समुद्र तल से 4000 मी. से भी अधिक ऊँचाई पर स्थित यह दर्रा अरुणाचल प्रदेश को मॉडले (म्यांमार) से जोड़ता है।
शेनकोटाह दर्रा	पश्चिम घाट में अवस्थित, यह दर्रा, तमिलनाडु के मदुरै नगर को केरल के कोट्टायम नगर से जोड़ता है। इस दर्रे के पास इसी नाम का एक छोटा नगर भी है।



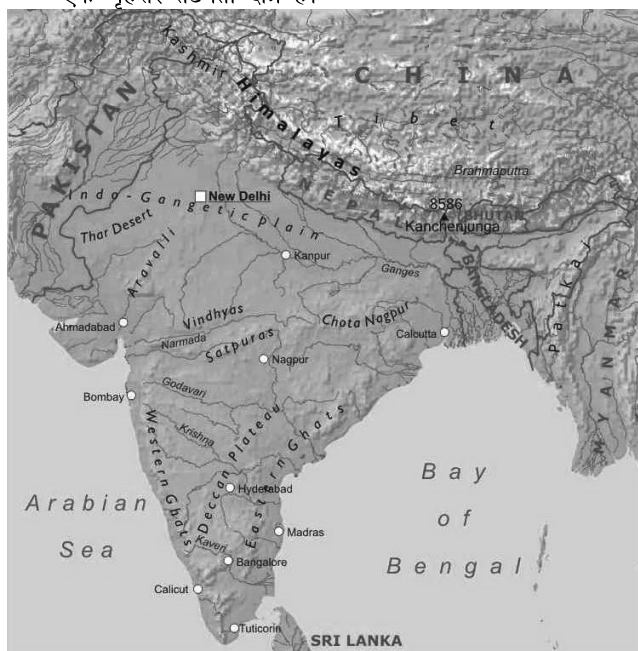
भारत के प्रमुख दर्रा

- ये मैदान, नदियों की बाढ़ के साथ बह कर आई कछारी मिट्टी से बने दुनिया के सबसे बड़े मैदानों में से हैं और धरती पर सर्वाधिक घनी आबादी वाले क्षेत्रों में से एक हैं।
- रेगिस्तानी क्षेत्र को दो भागों में बांटा जा सकता है—‘वृहत रेगिस्तान’ और ‘लघु रेगिस्तान’।
- वृहत रेगिस्तान कच्छ के रण से उत्तर की ओर लूनी नदी तक फैला है।
- लघु रेगिस्तान का विस्तार जैसलमेर और जोधपुर के बीच लूनी से उत्तर-पश्चिम तक है।
- वृहत और लघु रेगिस्तानों के बीच बंजर भूमि क्षेत्र है, जिसमें चूना पत्थर की पहाड़ियों से चट्टानी भूमि शामिल है।
- प्रायद्वीपीय पठार गंगा और सिंधु के मैदानों से सटा है, जिसमें 460 से 1,220 मीटर तक अलग-अलग ऊँचाई वाले पहाड़ और पर्वतमालाएँ शामिल हैं।
- इनमें अरावली, विन्ध्य, सतपुड़ा, मैकाले और अजंता पर्वतमालाएँ प्रमुख हैं।



हिमालय शृंखला

- ❏ प्रायद्वीप के एक तरफ पूर्वी घाट स्थित हैं जिनकी ऊँचाई करीब 610 मीटर है और दूसरी तरफ पश्चिमी घाट हैं जिनकी ऊँचाई सामान्यतः 915 से 1,220 मीटर तक है, जो कुछ स्थानों पर 2,440 मीटर तक जाती है।
- ❏ पश्चिमी घाटों और अरब सागर के बीच एक संकीर्ण तटवर्ती पट्टी है, जबकि पूर्वी घाटों और बंगाल की खाड़ी के बीच एक वृहत्तर तटवर्ती क्षेत्र है।

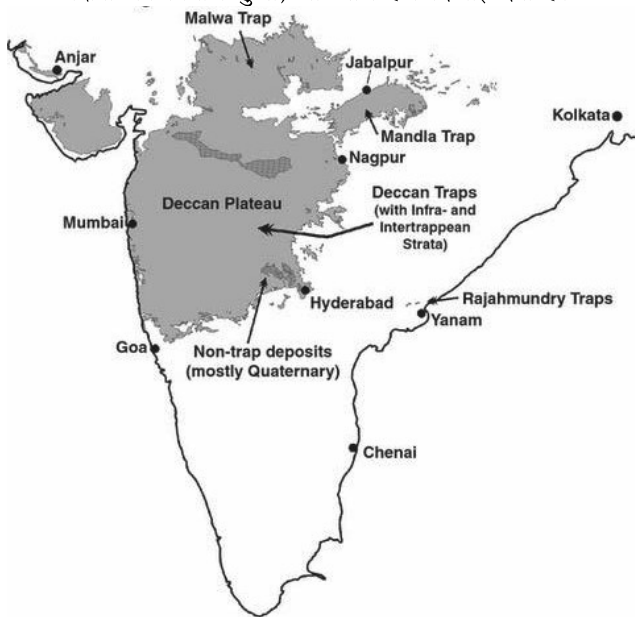


भारत का प्राकृतिक मानचित्र

भूगर्भीय संरचना

- ❏ भूगर्भीय क्षेत्र मुख्य रूप से भौतिक विशेषताओं का अनुसरण करता है और इसे 3 क्षेत्रों में वर्गीकृत किया जा सकता है।
 1. हिमालय और उससे जुड़ी पर्वतमालाओं का समूह
 2. सिंधु-गंगा का मैदान
 3. प्रायद्वीपीय ढाल।

- ❏ उत्तर में हिमालय और पूर्व में नागा-लुशाई पर्वत निर्माण करने वाली हलचलों से निर्मित क्षेत्र हैं।
- ❏ इस क्षेत्र का अधिकतर भाग, जो आज विश्व के कुछ सर्वाधिक मनोरम पर्वतीय दृश्य प्रस्तुत करता है, वह करीब 60 करोड़ वर्ष पूर्व समुद्र था।
- ❏ करीब 7 करोड़ वर्ष पहले शुरू हुई हलचलों से हुए पर्वत निर्माण की श्रृंखलाओं में, तलछट चट्टानों ने अधिक ऊँचाई ग्रहण की।
- ❏ मौसमी परिवर्तनों और भू-क्षरण से चट्टानों के टूटने के कारण मैदानों का निर्माण हुआ, जो आज हमें दिखाई देता है।

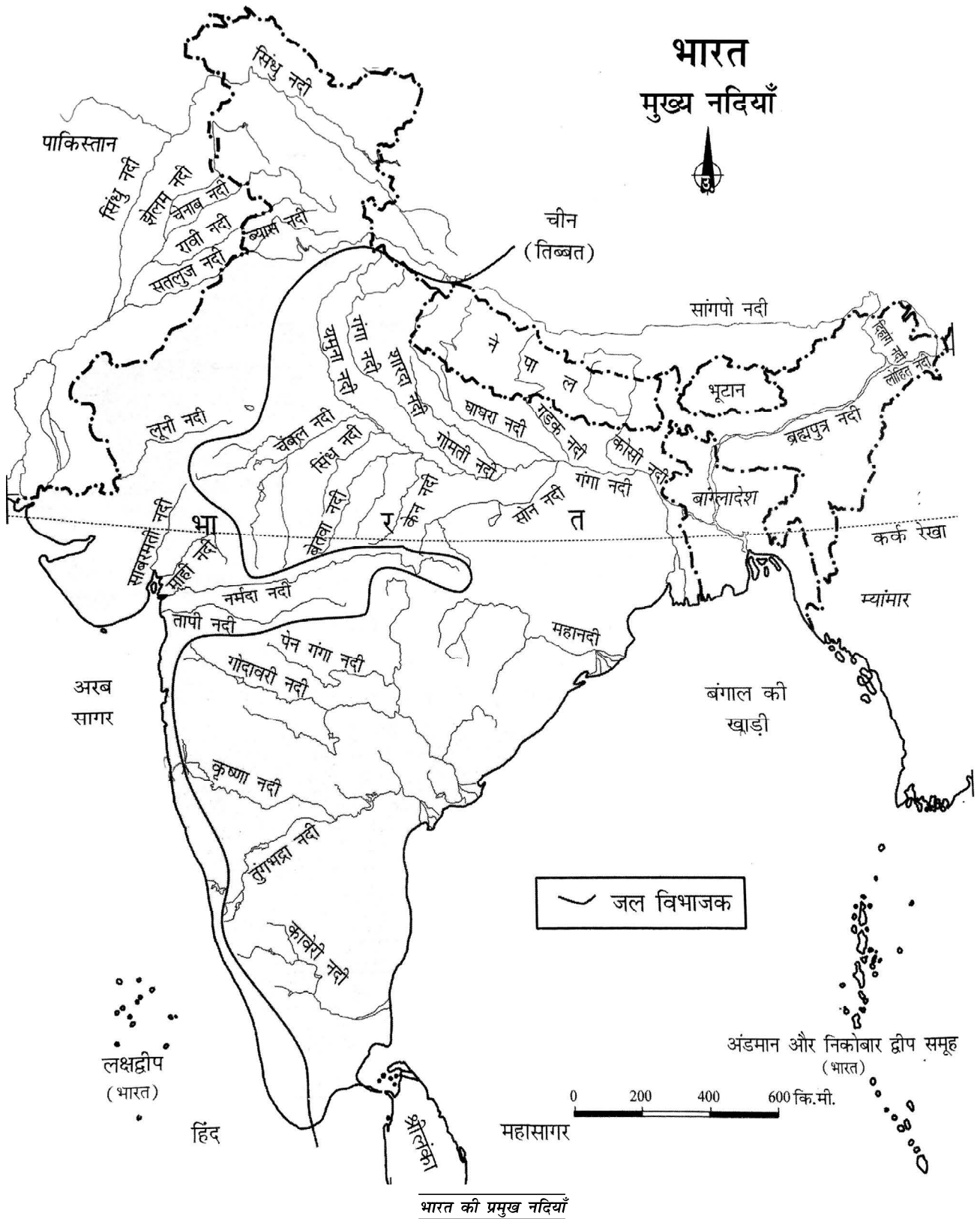


प्रायद्वीपीय भारत

- ❏ सिंधु-गंगा के मैदान विस्तृत कछारी क्षेत्र हैं, जो उत्तर में हिमालय को दक्षिण के प्रायद्वीप से पृथक करते हैं। प्रायद्वीप अपेक्षाकृत स्थिर क्षेत्र है। इसमें कभी-कभार भूकंप से हलचल पैदा होती है।
- ❏ इस क्षेत्र में 380 करोड़ वर्ष पूर्व धरती के निर्माण के समय के अत्यंत प्राचीन कार्यांतरित शैल पाए जाते हैं; शेष चट्टानों में गोंडवाना संरचना, दक्षिणी पठार संरचना और कम प्राचीन तलछट भूमि शामिल है।

नदी प्रणालियाँ

- ❏ भारत की नदी प्रणालियों को हिमालयी नदियों, दक्षिणी नदियों, तटवर्ती नदियों और अंतरदेशीय बरसाती नदियों में वर्गीकृत किया जा सकता है। हिमालयी नदियाँ बर्फ और हिमनदों के पिघलने से बनती हैं और इसलिए वे वर्ष भर निरंतर बहती रहती हैं।
- ❏ मानसून के महीनों में, हिमालयी क्षेत्र में तेज वर्षा होती है, जिससे नदियों में उफान आता है और बार-बार बाढ़ आती है।
- ❏ दूसरी तरफ दक्षिणी नदियाँ वर्षा पर निर्भर हैं, अतः उनका आकार घटता-बढ़ता रहता है। इनमें से कई नदियाँ बारहमासी नहीं हैं।



- ❶ तटवर्ती नदियाँ, विशेषकर पश्चिमी तटवर्ती नदियों की लंबाई अधिक नहीं है और उनके जल ग्रहण क्षेत्र सीमित हैं।
- ❷ मुख्य हिमालयी नदी प्रणालियाँ सिंधु और गंगा-ब्रह्मपुत्र-मेघना प्रणाली का हिस्सा हैं।
- ❸ सिंधु नदी, विश्व की बड़ी नदियों में से एक है, जिसका उद्गम स्थल तिब्बत में मानसरोवर के निकट है और यह पहले भारत और इसके बाद पाकिस्तान से बहते हुए अंततः कराची के निकट अरब सागर में मिल जाती है।
- ❹ भारतीय भू-भाग में बहने वाली इसकी महत्वपूर्ण सहायक नदियों में सतलुज (जो तिब्बत से निकलती है), व्यास, रावी, चिनाब और झेलम शामिल हैं।
- ❺ गंगा-ब्रह्मपुत्र-मेघना अन्य महत्वपूर्ण नदी प्रणाली है जिसके प्रमुख उप-थलों में भागीरथी और अलकनंदा के थाले शामिल हैं। ये दो नदियाँ देव प्रयाग में आकर गंगा बन जाती हैं।
- ❻ गंगा नदी उत्तराखंड, उत्तर प्रदेश, बिहार, झारखंड और पश्चिम बंगाल राज्यों से होकर गुजरती है।
- ❼ भागीरथी, अतीत के मुख्य नदी मार्ग राजमहल पर्वतमाला के नीचे से निकलती है जबकि पद्मा पूर्व की ओर बढ़ते हुए बांग्लादेश में प्रवेश कर जाती है।
- ❽ गंगा की महत्वपूर्ण सहायक नदियों में यमुना, रामगंगा, घाघरा, गंडक, कोसी, महानंदा और सोन शामिल हैं।
- ❾ चंबल और बेतवा इसकी महत्वपूर्ण उप-सहायक नदियाँ हैं, जो यमुना के गंगा में मिलने से पूर्व यमुना में समा जाती है।
- ❿ पद्मा और ब्रह्मपुत्र बांग्लादेश में मिलती हैं और पद्मा या गंगा के रूप में निरंतर बहती हैं।
- ⓫ ब्रह्मपुत्र तिब्बत से प्रारंभ होती है, जहाँ से त्सांगपो के रूप में जाना जाता है और भारत में अरुणाचल प्रदेश में प्रवेश करने तक यह दिहांग के नाम से एक लंबा मार्ग तय कर चुकी होती है।
- ⓬ पासीघाट के निकट दिबांग और लोहित नदियाँ ब्रह्मपुत्र में मिलती हैं और यह संयुक्त नदी असम घाटी में बहती है। धुबरी से निचली धारा बांग्लादेश में प्रवेश करती है।
- ⓭ भारत में ब्रह्मपुत्र की प्रमुख सहायक नदियों में सुबनसिरी, जिया भरेली, धनसिरी, पुथीमारी, पगलादिया और मानस शामिल हैं।
- ⓮ बांग्लादेश में तीस्ता नदी ब्रह्मपुत्र में मिलती है और वह अंततः गंगा में समाहित हो जाती है।
- ⓯ मेघना की मुख्य धारा के रूप में बराक नदी मणिपुर में पर्वतीय क्षेत्र से शुरू होती है। इस नदी की प्रमुख सहायक नदियों में मक्कू, तरांग, जीरी, सोनाई, रुकणी, कटाखल, धालेश्वरी, लांगचिनी, मडुआ और जयंतिया शामिल हैं।
- ⓰ बराक बांग्लादेश में भैरव बाजार के निकट गंगा-ब्रह्मपुत्र के मिलने के स्थान तक जारी रहती है।
- ⓱ दक्षिणी क्षेत्र में, सामान्यतः पूर्व दिशा में बहने वाली अधिकतर बड़ी नदी प्रणालियाँ बंगाल की खाड़ी में गिरती हैं।
- ❶ पूर्व की ओर बहने वाली प्रमुख नदियों में गोदावरी, कृष्णा, कावेरी और महानदी शामिल हैं।
- ❷ नर्मदा और ताप्ती पश्चिम की ओर बहने वाली प्रमुख नदियाँ हैं।
- ❸ दक्षिणी प्रायद्वीप में गोदावरी दूसरी सबसे बड़ी नदी घाटी है, जो भारत के दस प्रतिशत क्षेत्र को कवर करती है।
- ❹ इसके बाद कृष्णा नदी घाटी का स्थान है और इस क्षेत्र में महानदी एक अन्य बड़ी नदी घाटी है।
- ❺ दक्षिण क्षेत्र के ऊँचाई वाले इलाकों में अरब सागर की ओर बहने वाली नर्मदा का थाला और दक्षिण में बंगाल की खाड़ी की ओर बहने वाली कावेरी नदी का थाला, दोनों लगभग समान आकार के हैं, परंतु उनका स्वरूप और विशेषताएँ भिन्न हैं।
- ❻ राजस्थान में कुछ ऐसी नदियाँ हैं जो समुद्र तक नहीं जाती हैं। वे साल्ट लेक में गिरती हैं या रेत में लुप्त हो जाती हैं।
- ❼ इनके अलावा कुछ रेगिस्तानी नदियाँ हैं, जो कुछ दूरी तक बहती हैं और रेगिस्तान में लुप्त हो जाती हैं। ये हैं—लूनी, माछु, रूपे, सरस्वती, बनास, घग्घर आदि।
- ❽ समूचे देश को 20 नदी घाटियों/नदी थाला समूहों में वर्गीकृत किया गया है जिनमें से 12 बड़े थाले और 8 संयुक्त नदी थाले हैं।
- ❹ 12 बड़े नदी थालों में—(1) सिंधु (2) गंगा-ब्रह्मपुत्र-मेघना (3) गोदावरी (4) कृष्णा (5) कावेरी (6) महानदी (7) पेन्नार (8) ब्राह्मणी-वैतरणी (9) साबरमती (10) माही (11) नर्मदा (12) ताप्ती हैं।
- ❹ इनमें से प्रत्येक थाले का बहाव क्षेत्र 20 हजार वर्ग किलोमीटर से अधिक का है।
- ❹ आयोजन और प्रबंधन के 8 संयुक्त नदी थाले हैं, जो शेष सभी मध्यम (2000 से 20,000 वर्ग किलोमीटर बहाव क्षेत्र वाली) और लघु नदी प्रणालियों को उपयुक्त ढंग से जोड़ते हैं।

8 संयुक्त नदी थाल

- ❶ सुवर्ण रेखा थाला, जो सुवर्ण रेखा और वैतरणी के बीच अन्य छोटी नदियों को जोड़ता है।
- ❶ महानदी और पेन्नार के बीच पूर्व की ओर बहने वाली नदियाँ।
- ❶ पेन्नार-कन्याकुमारी के बीच पूर्व की ओर बहने वाली नदियाँ।
- ❶ राजस्थान के रेगिस्तान में अंतरदेशीय बहाव क्षेत्र।
- ❶ लूनी सहित कच्छ और सौराष्ट्र के पश्चिम की ओर बहने वाली नदियाँ।
- ❶ ताप्ती से ताद्री तक पश्चिम की ओर बहने वाली नदियाँ।
- ❶ ताद्री से कन्याकुमारी तक पश्चिम की ओर बहने वाली नदियाँ।
- ❶ म्यांमार (बर्मा) और बांग्लादेश की ओर बहने वाली छोटी नदियाँ।

जलवायु/ऋतुएं

- भारत की जलवायु को मोटे तौर पर उष्णकटिबंधीय मानसूनी कहा जा सकता है।
- भारतीय मौसम विभाग (IMD) ने 4 आधिकारिक ऋतुएं निर्दिष्ट की हैं:

शीत, (दिसंबर से अप्रैल के प्रारंभ तक)

- वर्ष के सबसे ठंडे महीने दिसंबर और जनवरी होते हैं, जब उत्तर-पश्चिम में औसत तापमान करीब 10-15 डिग्री सेल्सियस (50-59 डिग्री फारेनहाइट) होता है; भारत के दक्षिण-पूर्व में मुख्य भू-भाग पर जैसे-जैसे आप भूमध्य रेखा की ओर जाएंगे, तो औसत तापमान बढ़ता जाएगा।

ग्रीष्म ऋतु या पूर्व ऋतु

- जो (अप्रैल से जून तक उत्तर-पश्चिमी भारत में अप्रैल से जुलाई तक)।
- पश्चिमी और दक्षिणी क्षेत्रों में अप्रैल सबसे गर्म महीना होता है; उत्तरी क्षेत्र में सबसे गर्म महीना मई का है।

मानसून या वर्षा ऋतु, जुलाई से सितंबर तक

- इस मौसम में आर्द्र दक्षिण-पश्चिमी ग्रीष्म मानसून छाया रहता है, जो मई के अंत या जून के प्रारंभ में शुरू होकर धीरे-धीरे देशभर में फैलता है।
- मानसून की वर्षा उत्तर भारत में अक्टूबर के शुरू में कम होने लगती है। दक्षिण भारत में अधिक वर्षा होती है।

मानसून-परवर्ती ऋतु, (अक्टूबर से दिसंबर तक)

- उत्तर-पश्चिमी भारत में अक्टूबर और नवंबर आमतौर पर वर्षा रहित होते हैं।
- हिमालयी राज्यों के अधिक समशीतोष्ण होने के कारण, यहां दो अतिरिक्त ऋतुएं होती हैं—पतझड़ और वसंत।
- परंपरागत रूप में भारत में 6 ऋतुएं मानी जाती हैं, जिनमें प्रत्येक की अवधि करीब 2 महीने होती है।
- ये हैं—वसंत, ग्रीष्म, वर्षा, पूर्व पतझड़ (शरद), उत्तर पतझड़ (हेमंत) और शीत (शिशिर)।
- यह 12 महीनों को 6 ऋतुओं में बांटने के ज्योतिषीय वर्गीकरण पर आधारित है।
- प्राचीन हिंदू कैलेंडर भी इन ऋतुओं को उनके महीनों के क्रम में रखता है।
- भारत की जलवायु दो मौसमी हवाओं से प्रभावित होती है—उत्तर-पूर्वी मानसून और दक्षिण-पश्चिमी मानसून।
- उत्तर-पूर्वी मानसून को आमतौर पर शीतकालीन मानसून कहा जाता है, जिसमें हवाएं जमीन से समुद्र की ओर चलती हैं, जबकि दक्षिणी-पश्चिमी मानसून ग्रीष्मकालीन मानसून है, जिसमें हवाएं

हिंद महासागर, अरब सागर और बंगाल की खाड़ी से होते हुए जमीन की ओर बहती हैं।

वनस्पति

- भारत वनस्पति की दृष्टि से अत्यंत समृद्ध है। उपलब्ध आंकड़ों के अनुसार पादप विविधता की दृष्टि से भारत का विश्व में 10वां और एशिया में चौथा स्थान है।
- अभी तक करीब 70 प्रतिशत क्षेत्र में किए गए सर्वेक्षणों में 46,000 पादप प्रजातियां पाई गई हैं। यहां उत्कृष्ट वनस्पतियों की 15,000 किस्में पाई जाती हैं।

भारत को 8 विशिष्ट वानस्पतिक क्षेत्रों में वर्गीकृत किया जा सकता है।

पश्चिमी हिमालय	पश्चिमी हिमालय क्षेत्र कश्मीर से कुमाऊं तक फैला है। इसके उष्ण अंचल के जंगलों में चीड़, अन्य शंकु वृक्ष और चौड़ी पत्तियों वाले वृक्ष बहुतायत में पाए जाते हैं। उच्च शिखरों पर देवदार, नीले चीड़, सनोवर वृक्ष व श्वेत देवदार के जंगल हैं। लगभग 4,750 मीटर या उससे अधिक ऊंचाई पर उष्ण अंचल की ऊपरी सीमा से अल्पाइन अंचल यानी उच्च पर्वतीय क्षेत्र प्रारंभ होता है। इस अंचल के विलक्षण वृक्षों में उच्च स्तरीय श्वेत देवदार, श्वेत भोज वृक्ष, सदाबहार वृक्ष शामिल हैं।
पूर्वी हिमालय	पूर्वी हिमालय क्षेत्र सिक्किम से पूर्व की ओर फैला है और दार्जीलिंग, कुर्सियांग और आसपास के क्षेत्रों को अपने में समेटे है। इस उष्ण अंचल में ओक, जायफल, द्विफल बड़े फूलों वाले सदाबहार वृक्ष भोजवृक्ष और छोटी बंत के जंगल हैं।
असम क्षेत्र	असम क्षेत्र में ब्रह्मपुत्र नदी और सुरमा घाटियां शामिल हैं, जहां आमतौर पर मोटे बांस के गुच्छे और लंबी घास वाले सदाबहार वन हैं।
सिंधु का मैदान	सिंधु के मैदानी क्षेत्र में पंजाब, पश्चिमी राजस्थान और उत्तरी गुजरात के मैदान शामिल हैं। यह एक शुष्क एवं उष्ण क्षेत्र है, जिसमें प्राकृतिक वनस्पतियां मिलती हैं।

गंगा का मैदान	गंगा का मैदानी क्षेत्र कछारी भूमि कहलाता है, जहां गेहूं, गन्ना और चावल की खेती होती है। इस भू-भाग में केवल छोटे से क्षेत्र में विविध प्रकार के वन पाए जाते हैं।
दक्षिणी क्षेत्र	दक्षिणी क्षेत्र में भारतीय प्रायद्वीप की समूची समतल भूमि समाहित है। इस क्षेत्र में झाड़ीदार जंगलों से लेकर मिश्रित पतझड़ी जंगलों की विभिन्न प्रकार की वनस्पतियां पाई जाती हैं।
मालाबार क्षेत्र	मालाबार क्षेत्र में अत्यधिक आर्द्र पर्वतीय प्रदेश शामिल है, जो प्रायद्वीप के पश्चिमी तट के समानांतर है। जंगली वनस्पतियों की दृष्टि से समृद्ध होने के अलावा इस क्षेत्र में महत्वपूर्ण वाणिज्यिक फसलों जैसे— नारियल, सुपारी, काली मिर्च, कॉफी, चाय, रबड़ और काजू की खेती की जाती है।
अंडमान क्षेत्र	अंडमान क्षेत्र में प्रचुर सदाबहार, मैंग्रोव, तटवर्ती और बरसाती जंगल है। हिमालयी क्षेत्र कश्मीर से अरुणाचल प्रदेश तक फैला है जिसमें सिक्किम, मेघालय और नागालैंड समाहित है। दक्षिणी प्रायद्वीप स्थानिक वनस्पति की दृष्टि से समृद्ध है, जहां बड़ी संख्या में ऐसे पेड़-पौधे हैं, जो और कहीं नहीं पाए जाते हैं।

- देश की वनस्पति का अध्ययन भारतीय वनस्पति विज्ञान सर्वेक्षण (BSI) और देश भर में स्थित इसके 9 क्षेत्रीय कार्यालयों तथा कुछ विश्वविद्यालयों तथा अनुसंधान संस्थानों द्वारा किया जाता है।
- एथनो-बोटैनिकल यानी मानव-वनस्पति अध्ययन में पादपों और उनके उत्पादों की उपयोगिता के बारे में अध्ययन किया जाता है।
- ऐसे पौधों का वैज्ञानिक अध्ययन BSI द्वारा किया गया है। देश के विभिन्न जनजातीय क्षेत्रों में कई विस्तृत नृजातीय सर्वेक्षण किए जा चुके हैं।
- विज्ञान की दृष्टि से महत्वपूर्ण पौधों की 800 प्रजातियों को विभिन्न क्षेत्रों से इकट्ठा किया गया है और उनकी पहचान की गई है।
- कृषि, उद्योग और शहरी विकास के लिए वनों के ह्रास के कारण कई भारतीय पौधों का अस्तित्व खतरे में है।
- करीब 1,336 पादप प्रजातियां ऐसी हैं जिनका अस्तित्व खतरे में है।

में है।

- बड़े पौधों की करीब 20 प्रजातियों की पहचान की गई है, जिनका अस्तित्व समाप्त होने की आशंका है, क्योंकि उन्हें पिछले 6-10 दशकों से देखा नहीं गया है।
- भारतीय वनस्पति विज्ञान सर्वेक्षण ने अस्तित्व समाप्ति का खतरा झेल रहे पौधों की एक सूची 'रेड डेटा बुक' के रूप में प्रकाशित की है।

भारत के जीव संसाधन

- भारत अपनी बहु जैव-भौगोलिक अवस्थिति, विविधतापूर्ण जलवायु स्थितियों और असंख्य पारिस्थितिकी-विविधता और भू-विविधता के कारण जैविक विविधता की दृष्टि से अत्यंत समृद्ध है।
- भारत की विशाल जैविक विविधता में पारिस्थितिकी प्रणालियां, जनसंख्या, प्रजातियां और उनके आनुवंशिक स्वरूप शामिल हैं।
- इस विविधता का श्रेय भौतिक और जलवायु स्थितियों में व्यापक भिन्नता को जाता है।
- जिसके फलस्वरूप पारिस्थितिकी में प्राकृतिक वास संबंधी विविधताएं पैदा होती हैं। यह उष्ण कटिबंधी, उप-उष्णकटिबंधी, समशीतोष्ण, अल्पाइन से रेगिस्तान तक फैली हुई है।

जनसांख्यिकीय पृष्ठभूमि	
जनगणना	भारत में 2011 की जनगणना 1872 के बाद 15वीं जनगणना थी। इसे दो चरणों में कराया गया।
जनसंख्या	भारत की जनसंख्या 1 मार्च, 2011 को 121.09 करोड़ (62.33 करोड़ पुरुष और 58.75 करोड़ महिलाएं) थी।
	विश्व की 13.579 करोड़ वर्ग किलोमीटर क्षेत्रफल भू-भाग में भारत की हिस्सेदारी मात्र 2.4 प्रतिशत है। फिर भी यह विश्व की आबादी के एक बड़े हिस्से को आश्रय प्रदान करता है और उसका पालन-पोषण करती है।
	भारत की जनसंख्या, जो 20वीं शताब्दी के प्रारंभ में करीब 23.84 करोड़ थी, 2011 में बढ़ कर 121.07 करोड़ हो गई।
	1911-21 के दशक को छोड़ कर, 1901 से प्रत्येक दशक में हुई जनगणनाओं के दौरान भारत की आबादी में तीव्र वृद्धि दर्ज हुई है।

जनसंख्या घनत्व	जनसंख्या संकेन्द्रण के महत्वपूर्ण पैमानों में जनसंख्या घनत्व भी एक है। इसे प्रति वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में लोगों की संख्या के रूप में परिभाषित किया जाता है।	साक्षरता	ऐसा व्यक्ति जो पढ़ सकता है, परंतु लिख नहीं सकता, साक्षर नहीं कहा जा सकता। 1991 से पहले की जनगणनाओं में 5 वर्ष से कम आयु के बच्चों को अनिवार्यतः निरक्षर समझा जाता था।
	भारत का जनसंख्या घनत्व 2011 में 17.72 प्रतिशत की दशकीय वृद्धि के साथ 382 प्रति वर्ग किमी. था।		2011 की जनगणना के अनुसार साक्षरता की दर 74.04% है, जिसमें 82.14% पुरुष और 65.46% महिलाएं हैं। 94% साक्षरता के साथ केरल पहले स्थान पर है। इसके बाद लक्षद्वीप (92.28%) का स्थान है। देश में साक्षरता की दृष्टि से बिहार अंतिम स्थान पर है, जहां साक्षरता की दर 63.82% है।
	1991 और 2011 के बीच सभी राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों में जनसंख्या घनत्व में वृद्धि हुई है। बड़े राज्यों में बिहार सर्वाधिक घनी आबादी वाला राज्य है, जहां जनसंख्या का घनत्व 1103 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर है। इसके बाद पश्चिम बंगाल (1,028) और केरल (860) का स्थान है।		96.1 प्रतिशत पुरुष साक्षरता और 92 प्रतिशत महिला साक्षरता दर के साथ केरल का देश में पहला स्थान है। इसके विपरीत, पुरुषों (73.39%) और महिलाओं (53.33%), दोनों की साक्षरता दर के मामले में बिहार अंतिम पायदान पर है।
लिंग अनुपात	लिंगानुपात को प्रति 1,000 पुरुषों की तुलना में महिलाओं की संख्या के रूप में परिभाषित किया जाता है।		
	किसी समाज में एक निर्दिष्ट काल के दौरान पुरुषों और महिलाओं के बीच प्रचलित समानता को मापने के लिए लिंगानुपात एक महत्वपूर्ण सामाजिक संकेतक है। देश में लिंगानुपात महिलाओं की संख्या की दृष्टि से हमेशा प्रतिकूल रहा है।		
	20वीं सदी के प्रारंभ में यह 972 था और उसके बाद 1941 तक इसमें निरंतर कमी दर्ज हुई। 2001-2011 की अवधि में लिंग अनुपात में 2001 की जनगणना की तुलना में 2011 की जनगणना में 10 अंक की बढ़ोतरी दर्ज हुई, परंतु बच्चों के लिंग अनुपात में गिरावट आई और यह प्रति 1,000 लड़कों की तुलना में लड़कियों की संख्या कम होकर 919 पर आ गई।		
	2011 की जनगणना के प्रयोजन के लिए 7 वर्ष और उससे ऊपर की आयु के ऐसे व्यक्ति को साक्षर समझा गया, जो किसी भाषा में पढ़ने और लिखने में सक्षम हो।		

- विश्व जैव भौगोलिक वर्गीकरण के अनुसार भारत दो प्रमुख क्षेत्रों (प्लेयाक्रोटिक और इंडो-मलायन) और तीन बायोमस अर्थात् पादप जीवन के प्रमुख रूपों (जैसे उष्ण कटिबंधी आर्द्र वन, उष्ण कटिबंधी शुष्क/पर्णपाती वन और गर्म रेगिस्तान/अर्द्ध-रेगिस्तान) का प्रतिनिधित्व करता है।
- भारतीय वन्य जीव संस्थान ने एक संशोधित वर्गीकरण प्रस्तावित किया है, जो देश को 10 जैव भौगोलिक क्षेत्रों में वर्गीकृत करता है—हिमालय-पार, हिमालयी, भारतीय रेगिस्तान, अर्द्ध-शुष्क, पश्चिमी घाट, दक्षिणी प्रायद्वीप, गंगा का मैदान, पूर्वोत्तर भारत, द्वीप और तटवर्ती क्षेत्र।
- जैव विविधता सम्मेलन के अनुसार, भारत प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण और स्थायी विकास की दृष्टि से विश्व में अद्वितीय स्थान रखता है।
- वास्तव में विश्व के कुल भू-भाग में मात्र करीब दो प्रतिशत की हिस्सेदारी के साथ भारत विश्व के कुल जीव-जंतुओं की 7.5 प्रतिशत प्रजातियों के लिए जाना जाता है, जिसमें 92,037 प्रजातियां शामिल हैं।
- इनमें मात्र कीटों की 61,375 प्रजातियां शामिल हैं। अनुमान है कि अकेले भारत में आज जितनी प्रजातियां विद्यमान हैं, उसका करीब दो गुना ऐसी हैं, जिनकी अभी खोज की जानी है।

□□□

□□□

परीक्षा उपयोगी प्रश्न

1. निम्नलिखित राज्यों के नामों पर विचार कीजिए-

1. छत्तीसगढ़
2. बिहार
3. मिजोरम
4. असम

इनमें से किन राज्यों से होकर कर्क रेखा गुजरती है-

- (a) 1 व 2 (b) 2 व 4
(c) 3 व 4 (d) 1, 2, 3 व 4

2. निम्नलिखित कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं-

1. महान हिमालय की सबसे ऊँची चोटी माऊंट एवरेस्ट है।
2. भारत में सबसे ऊँची चोटी K2 है।
3. लघु हिमालय का निर्माण कार्यांतरित चट्टानों से हुआ है।

सही उत्तर का चयन कीजिए-

- (a) 1 व 2 (b) 2 व 3
(c) 1 व 3 (d) 1, 2 व 3

3. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए-

1. सियाचिन ग्लेशियर संसार का सबसे ऊँचा ग्लेशियर होने के साथ ही संसार का सबसे ऊँचा युद्धक्षेत्र भी है।
2. सियाचिन काराकोरम पर्वत श्रेणी का हिस्सा है जिस पर वर्तमान में पाकिस्तान का नियंत्रण है।

उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं-

- (a) केवल 1 (b) केवल 2
(c) 1 व 2 दोनों (d) न तो 1 न ही 2

4. निम्नलिखित कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं-

1. खादर का मैदान नदियों द्वारा लाए गए अवसादों के निरंतर जमाव के कारण अत्यंत उर्वर होता है।
2. भाबर का मैदान कंकड़ व बजरी के जमावों से निर्मित उच्च सांभ्रता वाला क्षेत्र होता है।

उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं-

- (a) केवल 1 (b) केवल 2
(c) 1 व 2 दोनों (d) न तो 1 न ही 2

5. भारतीय चट्टानों के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए-

1. अर्कियन क्रम की चट्टान जीवाश्म रहित होती हैं।
2. गोंडवाना क्रम की चट्टानें खनिजों का भण्डार हैं जिसमें लौह अयस्क तांबा, निकिल आदि पाया जाता है।
3. धारवाड़ क्रम की चट्टानें बिटुमिनस कोयले से समृद्ध हैं।

उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं-

- (a) 1 व 2 (b) 2 व 3
(c) 1 व 3 (d) केवल 3

6. पश्चिमी घाट के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए-

1. पश्चिमी घाट सघन वनस्पति वाला उच्च जैव विविधता युक्त क्षेत्र है।
2. पश्चिमी घाट का ढाल अत्यंत तीव्र है क्योंकि यहाँ नदियाँ तीव्र वेग से गिरती हैं।
3. थालघाट दर्रा पश्चिमी घाट में ही पाया जाता है।

उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं-

- (a) केवल 1 (b) 1 व 2
(c) 2 व 3 दोनों (d) 1, 2 व 3

7. बैरन द्वीप जो कि भारत का एकमात्र सक्रिय ज्वालामुखी है; अवस्थित है-

- (a) पुद्दुच्चेरी (b) ग्रेट निकोबार
(c) असम (d) केरल

8. निम्नलिखित नदियों पर विचार कीजिए-

1. रामगंगा
2. घाघरा
3. बागमती
4. रावी

इनमें से कौन सी नदी/नदियाँ गंगा की सहायक नदी/नदियाँ हैं-

- (a) 1, 2 व 3 (b) 2, 3 व 4
(c) 1, 2 व 4 (d) 1, 2, 3 व 3

9. निम्नलिखित नदियों पर विचार कीजिए-

1. सिंधु नदी का उद्गम जम्मू कश्मीर में है।
2. सिंधु नदी की सहायक नदी झेलम पर बगलीहार परियोजना स्थित है।
3. दुलहस्ती परियोजना चिनाब नदी पर स्थित है।

उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं-

- (a) 1 व 3 (b) 2 व 3
(c) 1 व 3 (d) 1, 2 व 3

10. हाल ही में चर्चा में रही थीन परियोजना किस नदी पर अवस्थित है।

- (a) गंगा नदी

- (b) चिनाब नदी
- (c) नर्मदा नदी
- (d) व्यास नदी

11. निम्नलिखित में से किन-किन राज्यों के बीच कावेरी जल-विवाद है-

- 1. तमिलनाडु
- 2. महाराष्ट्र
- 3. पुदुच्चेरी
- 4. कर्नाटक

सही उत्तर का चयन कीजिए-

- (a) केवल 1
- (b) 1 व 2
- (c) 1, 3 व 4
- (d) 2, 3 व 4

12. निम्नलिखित कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं-

- 1. हिमालयी नदियाँ विसर्पण करती हैं परंतु प्रायद्वीपीय नदियाँ विसर्पण नहीं करती।
- 2. हिमालयी नदियाँ U आकार की घाटी का निर्माण करती हैं जबकि प्रायद्वीपीय नदियाँ V आकार की घाटी का निर्माण करती हैं।
- 3. हिमालयी और प्रायद्वीपीय दोनों ही प्रकार की नदियाँ गोखुर झील का निर्माण करती हैं।

दिए गए कूट की सहायता से सही उत्तर का चयन कीजिए-

- (a) केवल 1
- (b) केवल 2
- (c) 1 व 2
- (d) 2 व 3

13. निम्नलिखित युग्मों में से कौन सा/से सुमेलित है/हैं।-

- | | | |
|-----------------------|---|----------------|
| 1. धुआँधार जल प्रपात | — | नर्मदा नदी |
| 2. बरकाना जल प्रपात | — | सीता नदी |
| 3. जोग जल प्रपात | — | शरावती नदी |
| 4. चित्रकूट जल प्रपात | — | इन्द्रावती नदी |

- (a) 1 व 3
- (b) 3 व 4
- (c) 1, 3 व 4
- (d) 1, 2, 3 व 4

13. निम्नलिखित युग्मों में से कौन सा/से सुमेलित है/हैं।-

- | | | |
|------------------|---|----------------|
| 1. रोहतांग दर्रा | — | हिमाचल प्रदेश |
| 2. जोजिला दर्रा | — | जम्मू कश्मीर |
| 3. लिपुलेख दर्रा | — | सिक्किम |
| 4. दिफू दर्रा | — | अरुणाचल प्रदेश |

- (a) 1, 2 व 4
- (b) 1, 3 व 4
- (c) 1, 2 व 3
- (d) 1, 2, 3 व 4

15. सबसे लम्बी तट रेखा किस राज्य की है-

- (a) आंध्र प्रदेश
- (b) गुजरात
- (c) पं. बंगाल
- (d) तमिलनाडु